इतिहास जानने के स्रोत के शेष भाग जारी हैं

रामायण व महाभारत से आर्यों के उस काल के जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त होती है जिसे महाकाव्य-काल कहते हैं।

बौद्ध एवं जैन ग्रन्थ

बौद्धों और जैनों के धार्मिक ग्रन्थों द्वारा प्राचीन काल की अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। सबसे प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ त्रिपिटक है—(१) विनयपिटक (२) अभिधम्मपिटक, (३) सुत्तपिटक, जिनके द्वारा बुद्ध के समय की राजनीतिक घटनाओं पर काफी प्रकाश पड़ता है। दीपवंश और महावंश ऐसे बौद्ध ग्रन्थ हैं जिनका प्रचुर ऐतिहासिक महत्व भी है और मौर्यवंश के बारे में तो इनके द्वारा बहुत महत्वपूर्ण सूचना मिलती है। जैन ग्रन्थों में जैनों का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ "परिशिष्टपर्वन्" है जिसमें कहीं-कहीं पर कुछ राजनीतिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। जैन ग्रन्थ पाँचवीं अथवा छठी शताब्दी ई० पू० में लिखे गये थे। राजा बिम्बसार के पहले के राजाओं के विषय में इन ग्रन्थों के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है।

लौकिक साहित्य

संस्कृत में लौकिक साहित्य काफी समृद्ध है। ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से लौकिक साहित्य को दो प्रमुख भागों में विभाजित कर सकते हैं—(१) काव्य साहित्य, और (२) ऐतिहासिक ग्रन्थ।

काव्य साहित्य

काव्य साहित्य में सबसे प्रमुख स्थान प्राप्त है रामायण और महाभारत को। इन दोनों महाकाव्यों की आत्मा पूरी तरह लौकिक है, यद्यपि आजकल इनको धार्मिक महत्व प्राप्त हो गया है।

लौकिक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण स्थान कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का आता है जिसमें राज्य और शासन के सिद्धान्तों का निरूपण है। अर्थशास्त्र से मौर्य राजाओं के शासन-व्यवस्था की जानकारी मिलती है। संस्कृत के कुछ नाटकों जैसे मालविकाग्निमित्रम, देवीचन्दगुप्तम्, और मुद्राराक्षसम् से काफी ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त होता है। पाणिनि के अष्टाध्यायी और पातंजलि के महाभाष्य का भी ऐतिहासिक महत्व है।

ऐतिहासिक ग्रन्थ

साहित्य के अन्तर्गत समसामयिक ग्रन्थ भी आ जाते हैं जिन्हें किसी कवि ने अपने समय के किसी राजा के जीवन की घटनाओं का वर्णन करने के लिए लिखा है। इस प्रकार के ग्रन्थों में बाण भट्ट द्वारा रचित "हर्षचरितम्" प्रमुख है जिसमें सम्राट हर्षबर्धन के जीवन की घटनाओं का उल्लेख है। समसामयिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों में इन ग्रन्थों का नाम भी अधिक महत्वपूर्ण है :—(१) गार्गी संहिता, (२) कामन्दकीय नीतिशास्त्र (३) राजतरंगिणी (४) गौड़वहो (५) नवसाहसांकचरित और (६) विक्रमांकदेवचरित। ऐतिहासिक ग्रन्थों में सबसे अधिक महत्व राजतरङ्गिणी का है। इसमें प्रारंभ से लेकर बारहवीं शताब्दी तक का काश्मीर का इतिहास है।

साहित्यिक साक्ष्य का विवेचन

साहित्यिक साक्ष्य के द्वारा प्राचीन भारत की सामाजिक स्थिति का जितना अधिक ज्ञान प्राप्त होता है उतना किसी अन्य साधन के द्वारा नहीं; किन्तु साहित्यिक ग्रन्थों में सबसे बड़ी कमी उनके रचना काल की संदिग्धता है। बहुत कम ग्रन्थों का रचना काल ठीक-ठीक मालूम होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से साहित्य

ग्रन्थों की दूसरी कमी यह है कि, इनमें अनेक अंशों को, बाद के लेखकों ने लिखकर जोड़ दिया है। इसीलिये साहित्यिक ग्रन्थों से ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त करने में बड़े विवेक से काम लेना पड़ता है।

(२) अभिलेख

प्राचीन भारत के इतिहास की सामग्री में अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है इन्हें समय-समय पर अनेक राजाओं ने लिखवाया था। अभिलेखो की संख्या बहुत अधिक है किन्तु कोई भी अभिलेख अशोक के पहले का नहीं है। सम्राट अशोक के अभिलेखों का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक व समुद्रगुप्त जैसे महान शासकों के विषय में हमारी अधिकांश जानकारी इनके अभिलेखों से ही होती है। ये अभिलेख देश के विभिन्न भागों से उपलब्ध हैं। अभिलेखों को ८ भागों में विभाजित किया गया है :—(१) स्तंभ-लेख (२) शिलालेख (३) गुहा-लेख (४) मूर्ति-लेख (५) प्राकार-अभिलेख (६) पात्र-अभिलेख (७) ताम्र-अभिलेख और (८) मुद्रा अभिलेख।

अभिलेखों का विवेचन

ऐतिहासिक दृष्टि से अभिलेखों का निम्नलिखित महत्व है—

(१) तिथि-क्रम का विश्वसनीय ज्ञान अभिलेखों द्वारा ही प्राप्त होता है।

(२) अभिलेख अपने समय की राजनैतिक घटनाओं के अलावा, सामाजिक और आर्थिक अवस्था का भी उल्लेख करते हैं। इस कारण अभिलेखों का सांस्कृतिक महत्व भी है।

(३) अभिलेखों द्वारा शासकों के पारस्परिक सम्बन्ध पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

(४) इनसे राज्यों का साम्राज्य-विस्तार निर्धारित करने में सहायता मिलती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से गुप्तकाल के बाद के अभिलेखों का महत्व असंदिग्ध नहीं है। इन अभिलेखों में बहुधा घटनाओं का असत्य विवरण है और इनमें नए-नए सम्वतों का प्रयोग किया गया है जिनसे हमारी कठिनाई बढ़ जाती है। अनेक अभिलेखों में एक ही घटना का परस्पर विरोधी विवरण मिलता है। बाद में अभिलेखों की वर्णन शैली इतनी अधिक अतिशयोक्तिपूर्ण है कि इनमें उल्लिखित घटनाओं का परीक्षण किए बिना इन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

(३) मुद्रा (सिक्के) साक्ष्य

कतिपय राजवंशों के इतिहास के लिये हमें मुद्राओं द्वारा प्राप्त जानकारी पर ही निर्भर रहना पड़ा है। कुछ गणतन्त्रों का इतिहास तो मुख्यतः मुद्राओं द्वारा ही जाना गया है। ऐतिहासिक जानकारी के साधनों में अभिलेखों के बाद मुद्राओं का ही स्थान है। मुद्रा साक्ष्य का महत्व निम्नलिखित बातों के कारण है :—

(१) मुद्राओं द्वारा तिथि क्रम निश्चित करने में बड़ी सहायता मिलती है क्योंकि अधिकांश मुद्राओं पर तिथियाँ खुदी हुई मिलती हैं।

(२) मुद्राएँ शासकों के व्यक्तित्व और उनकी रुचि का परिचय कराती हैं।

(३) देश की आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कराने में मुद्राओं से महत्वपूर्ण सूचना मिलती है।